स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य में समाज दर्शन

प्रा. संतोष रामचंद्र आडे

हिंदी विभाग

संत रामदास कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी

ता. घनसावंगी, जि. जालना.

Email:- adesr08@gmail.com

आजादी के बाद राष्ट्रीय नव-निर्माण की आकांक्षाएँ पालने वाला भारत अपने आंतरिक स्वरूप में यथोचित परिवर्तन न कर सका । जाति, वर्ग और प्रांत की पृथकताओं से हम उपर न उठ सके । पाश्चात्य-भौतिक और भोगवादी सभ्यता के आक्रमण से भी भारतीय समाज अपनी रक्षा न कर सका । व्यक्तिगत जीवन में स्वार्थ, अंहकार, मिथ्यादंभ आदि दुर्गुणों की बढ़ोत्तरी हूई । तो सामाजिक जीवन में प्रदर्शन, आडम्बर, झुठी प्रतिस्पर्धाएँ बढ़ी ।

यह समस्या न तो एक दिन की उपज है, न ही क्षण मात्र में इनका समाधान संभव हैं । सामाजिक विषमता की लंबी कहानी है । श्री रामधारी सिंह दिनकर ने इस स्थिति को रेखांकित करते हुए लिखा है – ''मुस्लिम राज्य के दौरान भारतीय-समाज और संस्कृति को बहुत कठिन राजनीतिक दबाव के दौर से गुजरना पडा । इस दौरान भारतीय समाज एवं संस्कृति में परदा-प्रथा, बहुविवाह, बालविवाह आदि नाना प्रकार की विकृतियॉ उत्पन हो गई । भारतीय संस्कृति अनुष्ठानों का एक आडम्बर मात्र बनकर रह गई । वर्ण व्यवस्था अधिक कट्टर हो गई, साथ ही छुआछूत का रोग संक्रमक बन गया । भारत जब अंग्रेजी शासन के अधिन हुआ तब ये समस्याये और गहन हो गई ।'' १

व्यक्ति और उसका जीवन :-

प्राथमिक इकाई होने के नाते व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव समाज के श्वास-प्रश्वास बनते है । श्री जयशंकर प्रसाद ने अपनी 'कामायनी' में लिखा है, वह आज भी यथावत है, बल्कि उसका विस्तार ही हुआ है । कथनी और करनी में भेद बढ़ा है । एक और व्यक्ति चाटुकारिता, चापलूसी को बुरा मानता है तो दूसरी ओर व्यक्ति अवसर आने पर दूसरों के सम्मुख नाक रगड़ता है, साथ ही यह भी चाहता है कि कोई उसके द्वारपर नाक रगड़े । सुदर्शन मजिठिया अपनी रचना 'कब्र खोदने की साजीश' में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की विडम्बना का चित्रण किया है । ''कब्र खोदने वाले सामान्यत: बाहर वाले नहीं होते वे अपने ही परिवार या रिश्तेदार के सदस्य या आपके धर्मवाले ही होते है । बाप की अर्थी का अग्निसंस्कार बेटा ही करता है । इस प्रकार अपनी कब्र दुनिया में उसी से खुदेगी जिस पर आपका भरोसा है '' २

आदमी का स्वभाव :-

आज के आदमी की महत्वकांक्षाएँ बढ़ गई है । प्रतिस्पर्धाए बढ़ गई है । साथ ही उसकी यह आकांक्षा भी है कि उसे केवल उसे ही वह सब कुछ प्राप्त हो अन्य किसी को कुछ न मिले । अभिलाषा पूर्ति के लिए मनुष्य के प्रयत्न उसके बौनेपन को उजागर कर देते है और वह उपहास का पात्र बन जाता है ।

परपीड़ा की वृति :-

आज वर्तमान समय में व्यक्ति अकारण ही दूसरों को पीड़ा, कष्ट देना चाहता है । यदि वह स्वंय पीडित हो तो दूसरों को पीडित देखना चाहता है । मानसिक चोट पहुँचाने का सबसे बढ़िया साधन है 'निंदा' । निंदा करके व्यक्ति को समाज की नजरों में गिराना चाहता है । श्री हरीशंकर परसाई ने 'निंदारस' नामक रचना में निंदको की तुलना प्रभु भक्तों के समूह से की है और निंदागान को सामूहिक रामधुन माना है ।'३

ईर्षा और जलन :-

दूसरों की प्रगति और अभ्युदय को देखकर व्यक्ति बेचैन हो जाता है । दाने-दाने के लिए छीना-झपटी की कौन कहे पेट भरा होने पर भी दूसरों की थाली छीनना स्वभाव हो गया है आदमी का । श्री बदीउज्जमा ने इस स्थिति पर कटाक्ष करते हुए लिखा है – 'सारी दुनिया ही एक बहुत बडा चुहाखाना है, जहॉ चुहामार बनकर ही जीदंगी बसर की जा सकती है ।' ४

व्यक्ति का खोकलापन :-

एक ओर तो व्यक्ति नैतिकता की दुहाई देता है, दूसरी ओर उसके विपरीत आचरण करता है । करनी और कथनी के भेद ने उसे हास्यास्पद बना दिया है । ''व्यापारी नमस्ते करके दाम बढ़ा देता है । विद्यर्थी प्रवेश के समय तथा परीक्षा में नमस्ते करके अपना स्वार्थ साधते है ।''५

नैतिकता के परिवर्तित मानदन्ड :-

परिवर्तित समय में नैतिकता की परिभाषाए भी आचरण के प्रति लापरवाह ही नहीं पृष्ठ भी है । उसे अपने नहीं दूसरों के प्रति ईमान की चिंता हो रहीं है । हर आदमी दूसरे के ईमान के बारे में चिंतित हो गया है । दूसरों के दरवाजे पर लाठी लिए खडा हो गया है । - ''क्या कर रहे है साहब ? इसके ईमान की रखवाली कर रहा हुँ – मगर अपना दरवाजा तो आप खुला छोड आये है । तो क्या हुआ ? हमारी ड्युटी तो इधर है ।'' ६

स्वार्थपरता और परस्पर संदेह :-

आज का व्यक्ति अंत्यत स्वार्थी,लोलुप और आत्मकेंद्रित हो गया है । संबधों की परस्परता का आधार विश्वास आज खण्डित होता जा रहा है । ''आज अविश्वास इतना बढ़ गया है कि भय के कारण लोगों को नींद तक नहीं आती । लोग सोते है, तो जूता सिर के नीचे और रुपया मौज में रखते है । इतनी सुरक्षा के बाद भी किसी की जेब कटती है । किसी के खाने में से जहर मिलता है ।'' ७

व्यक्ति का निकम्मापन :-

आज का व्यक्ति सुविधा, अकांक्षी, ऐश्वर्यकामी तो है, किन्तू कर्म निष्ठा का उसमें अभाव है । व्यक्ति के निठलेपन को व्यंग्यकार क्रिकेट मैच द्वारा स्पष्ट करता है । टेस्ट मैच के दौरान पूरे पॉच दिनों के लिए सारे राष्ट्र का कामकाज ठप्प करके देश को दॉवपर लगा सकते है। हम सभी पूरी तरह जिंदा होने का प्रमाण देने में जुट गये है । अन्याय का प्रतिकार न कर पाने के कारण समाज में आज ये स्थितियाँ पैदा हूई है ।

सामाजिक अधपतन की बानगी :-

व्यक्ति ही सामाजिक संरचना का आधार है । अत: व्यक्तित्व का व्यक्तित्व 'एनलार्ज' होकर समाज का व्यक्तित्व बनाता है । व्यक्ति की आचरण, भष्ट्रता की तरह समाज का अधपतन भी हिंदी गद्य व्यंग्यकारों की रचना में चित्रित हुआ है । आज समाज की यह स्थिति है- कोई किसी की मदद तो करता नहीं । पडोस में लाश पडी होगी और वे हलुवा पकाकर खा रहे होंगे । दिन दहाडे खून हो जाते है, वहाँ पर रात में डाके पडते है । सामाजिक मर्यादाओं के बंधन में शिथिल किया है । नियमों की अहवेलना करने का साहस आदमी में बड़ा है । परिणामत: संबंधों में भी आत्मियता का अहसास नहीं रह गया ।

पति-पत्नी संबंध :-

वर्तमान समय में आधुनिकीकरण की वैभव, लालसा ने सामाजिक विडम्बनाओं ने, आदमी के क्रुर व्यवहार ने, नारी मुक्ति की कामना ने और आधुनिक शिक्षा-पद्धति ने पति-पत्नी संबंधो को भी गहराई तक प्रभावित किया है । दाम्पत्य जीवन में परस्पर विश्वास, स्नेह और एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करने की जो परिपाटी थी, अब वह समाप्त हो चली है ।

नारी के प्रति दृष्टिकोण :-

नारी का शोषण और उसके प्रति वासनात्मकता दृष्टि रखना जहॉ पुरूष का स्वभाव बन गया, वहॉ मुक्ति के नाम पर स्वछंद भोज की कामना नारी की अभिलाषा । चौके-चुल्हे के दायरे में आकर आजादी की ईछा और आर्थिक स्वालंबन की दिशा में नारी ने कदम बढ़ाये है ।

आधुनिक सभ्यता :-

आधुनिकता हमारी दृष्टि में, वैज्ञनिक सोच में न आकर हमारी अतृप्त दमित वासनाओं और स्वछंद भोग की लालसा के कारण पर्याय रूप में आई है । पाश्चात रहन-सहन, विदेशी वस्तूओं के प्रति आकर्षण और अंग-प्रदर्शन उन्मुक्त यौन सुख भोग की ईच्छा आदि को ही हमने आधुनिकता मान लिया है ।

मध्यम वर्ग बनाम प्रतिष्ठा :-

उच्चवर्ग के सानिध्य से मध्यम वर्ग के अंदर भी कुछ लालसाएॅ जगी है । उसकी अपनी सीमाएॅ, विषेशताएॅ और संस्कार थे । परिणामत: मध्यम वर्ग उच्च वर्ग के साथ 'एडजष्ट' न हो सका किन्तु अपने आधार को छोड देने के कारण वह अपने वर्ग से भी कट गया । दूहरी पीड़ा का सामना उसे आज करना पड रहा है ।

नरेंद्र कोहली ने कहा है- ''मध्यम वर्ग उच्चवर्ग से प्रतिस्पर्धा करना चाहता है, उसकी नकल करना चाहता है । हम लोग जमीन पर बैठकर खाते है, किन्तु पार्टी जमीन पर देने में हमारी नाक दो मिलीमिटर झुक जाती है ।''८

सामाजिक कुप्रथाओं पर प्रहार :-

समाज की प्रगति में बाधक रीति-रिवाजों को युगानुकुल परिवर्तीत किया जान चाहिए । ऐसा लगता है आजादी के बाद जो जहॉ है वही अपनी जड़े मजबूती से गहरी जमा रखी है । जातिवाद राजनीति के कारण पनपा । बढ़ा तो दहेज जैसी बूराईयॉ सामाजिक स्टेटस में अर्थ की प्रभूता के कारण बढ़ी ।

जातिभेद और छुआछूत :-

जातिभेद की समाप्ति के जितने नारे बुलंद हुए उतनी ही तेजी से उसने अपनी जड़े जमाई । अशिक्षित ग्रामीणजन ही नहीं, पढ़े लिखे विद्वान भी इस जाति व्यवस्था की जड़ता के सम्मुख नतसिर है । छुआछूत की ये भावनाएॅ इतनी प्रबल है कि अछूतों द्वारा धर्म-परिवर्तन के बाद भी वह इस संस्कार से मुक्त नहीं हो पाते । इस पर ठाकुर सहब और पंडितजी ने कहा है- ''होने दो ! व्यभिचार से जाति नहीं जाती, शादी से जाती है ।''

विवाह की औपचारिकताएॅ :-

यह निर्विवाद है कि खर्चीली शादियॉ मनुष्य को दरिद्र और बेईमानी बनाती है । अपनी झूठी प्रतिष्ठा के लिए व्यक्ति अपना धन खर्च करता है । इस तरह अपने दुर्भाग्य को वह स्वंय आमंत्रण देता है । उसकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति से वाकिफ होने के बावजुद अपनी झूठी प्रतिष्ठा के लिए ब्याह में जी जान से ज्यादा खर्चा हो जाता है ।

दहेज का तांडव नर्तन :-

दहेज दानव के कारण ही कन्या का जन्म अशुभ माना जाता है और नारी उत्पिडन की घटनाएॅ होती है । आज इसी दहेज प्रथा के कारण हमारे देश में समाज में कितने बड़े पैमाने पर स्त्री भ्रुण हत्याएॅ हो रही है । किसी ने सच कहा है 'नारी ही नारी की सबसे बड़ी दुश्मन होती है' दहेज प्रताडना का शिकार होनेवाली नारी भी किसी की बेटी होती है । मालती जोशी ने 'बकुल ! फिर आना'लिखा है- ''हिंदुस्थान में लडकियों की शादी कहाँ होती है शादी तो अपने मॉ-बाप अपनी मर्जी से करते है ।''९

संदर्भ

१. रामधारी सिं दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ ९०

२. सुदर्शन मजीठिया, राममनोहर लोहिया, पृष्ठ २९०

३. हरिशंकर परसाई, तिरछी रेखाएॅ, पृष्ठ ९२

४. बदी उज्जमा, एक चुहे की मौत, पृष्ठ७३

५. नरेंद्र कोहली, जगाने का अपराध, पृष्ठ६९

६. हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृष्ठ १११

७. श्रीलाल शुक्ल, यहॉ से वहॉ, पृष्ठ १२८

८. श्रीराम ठाकुर दादा, पच्चीस घन्टे, पृष्ठ१७

९. मालती जोशी, बकुल ! फिर आना, गद्य सागर, पृष्ठ ७१

प्रा. संतोष रामचंद्र आडे

हिंदी विभाग

संत रामदास कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी

ता. घनसावंगी, जि. जालना.

Email:- adesr08@gmail.com